'शौर्य और देश प्रेम'

कवि परिचय

भूषण

वीर रस के कवियों में भूषण का स्थान सर्वोपरि है। 'वीर' रस को प्रतिष्ठित करने का श्रेय भूषण को ही है। उनका ओजस्वी व्यक्तित्व स्वाभिमान,निर्भीकता,जातीय गौरव एवं अन्याय के विरुद्ध विद्रोह की भावना से भरा हुआ था। उन्होने भारतीय संस्कृति के महान रक्षक शिवाजी और छत्रसाल की वीरता का ओजस्वी वर्णन करके हिन्दी कविता की श्री वृद्धि की।

भूषण कानपुर जिले के तिकवापुर गाँव के निवासी रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे । यद्यपि भूषण के जन्म विषय में विद्वानों में मतभेद है, किन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार इनका जन्म सन् 1613 ई० में मान्य है। प्रसिद्ध कवि चिन्तामणि और मतिराम इनके भाई कहे जाते हैं। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने खोज की है कि इनका नाम घनश्याम था। भूषण की उपाधि चित्रकूट के राजा रूद्र सोलंकी से मिली,परन्तु अब इनका नाम भूषण ही काव्य जगत में प्रसिद्ध है। कहते हैं महाराज छत्रसाल ने इन्हें सम्मान देने के लिए उनकी पालकी में कंधा लगाया था। तभी भूषण ने कहा था– 'सिवा को बखानो के बखानों छत्रसाल कौ ।' इनका निधन सन् 1715 ई. माना गया है।

भूषण द्वारा लिखित चार ग्रन्थ बताए जाते हैं –शिवराज भूषण, शिवाबावनी, छत्रसाल दशक, भूषण हजारा (भूषण उल्लास)

भूषण की मूल प्रवृत्ति वीर रस की थी। वीर रस से सम्बन्धित विभिन्न भावों और सन्दर्भों का समावेश भूषण की कविता में सहज रूप से देखा जा सकता है । वीर रस के अतिरिक्त उनकी कविता में रौद्र,वीभत्स,और भयानक रसों का भी समावेश हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि भूषण रससिद्ध कवि थे। उन्होंने रीतिकालीन श्रृंगारिकता की दिशा मोड़ दी । भूषण की रचनाओं का राष्ट्रीय महत्व है। उनके लिए शिवाजी का अपने देश की सांस्कृतिक चेतना, भौतिक संरचना और उसके गौरवशाली इतिहास के प्रति भावनात्मक लगाव जैसे संदर्भ ही हमारे देश–प्रेम को उजागर करने वाले आधार तथ्य हैं। मातृभूमि के निमित्त रची कविता न केवल देशवासियों के मन में साहस और शौर्य का संचार करती है अपितु ऐसी कविता देश–प्रेम के वीरतापरक भाव की अनुगामिनी भी बनती है। वीरता का यह भाव व्यक्ति की चारित्रिक दृढ़ता से ही फूटता है। उसकी यही चारित्रिक दृढ़ता समाज और राष्ट्र में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने के लिए कविता को शौर्यपूर्ण ललकार में बदल देती है। हिन्दी काव्य इतिहास में संपूर्ण आदिकाल वीरता की ऐसी ही भावनाओं से परिपूर्ण है। अनेक राष्ट्र नायकों के चरित्र की वीरता का बखान इस युग की कविता में किया गया है। इस आधार पर इसे वीरगाथा काल भी कहा जाता है। रीतिकाल में कवियो ंने अपने आश्रयदाता की वीरता को केंद्र बनाकर काव्य रचा है, रीतिकाल का ओजस्वी स्रोत सर्वाधिक रूप से महाकवि भूषण के काव्य में उमड़ पड़ा है। आधुनिक युग में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह 'दिनकर' और श्रीकृष्ण 'सरल' जैसे कवियों में मुखरित हुआ है।

भूषण के काव्य में वीर रस साकार हो उठा है। उनकी वीर रस से ओतप्रोत कविताएँ रीतिकाल के परिदृश्य में अपनी अलग पहचान बनाती हैं। उन्होंने अपनी कविता के लिए शिवाजी और छत्रसाल जैसे नायकों का चयन किया। इन दोनों वीर पुरुषों के हृदय में अपनी मातृभूमि के प्रति अडिग प्रेम था। इसी प्रेम को आधार मानकर भूषण ने इन नायकों के शौर्य का वर्णन अपनी ओजपूर्ण वाणी में किया है। प्रस्तुत छंदों में कवि ने अनेक उत्प्रेक्षाओं के माध्यम से शिवाजी के शौर्य का वर्णन करते हुए उन्हें अनेक तेजस्वी विभूतियों की कोटि में परिगणित किया है। शौर्य का वर्णन करते हुए भूषण ने शिवाजी की युद्ध क्षमता का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया है कि दिल्ली पति औरंगजेब के साथ–साथ अंग्रेज और अनीति में रत आम राजा उनसे भयभीत थे। शिवाजी की वीरता के भय से भयभीत रनिवास में रहने वाली स्त्रियाँ भी जंगल–जंगल भटकने के लिए बाध्य हो उठती थीं। उन्होंने छत्रसाल की बरछी का भी वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि दुष्टजनों को घायल करने की अद्भुत शक्ति उनकी बरछी में है। भावनाओं के अनुरूप शब्दों का चयन

वही महत्व था जो तुलसी के लिए राम और सूर के लिए कृष्ण का था । भूषण की रचनाओं में हमें प्रचुर मात्रा में ऐतिहासिक सामग्री मिल जाती है। शिवाजी और छत्रसाल का शौर्य वर्णन उनके काव्य का मुख्य विषय है। शिवाजी की युद्ध वीरता, दानशीलता, दयालुता, धर्मवीरता आदि का सजीव वर्णन ओजस्वी वाणी में इन्होंने किया है। इसी कारण भूषण वीर रस के प्रथम कोटि के कवि माने जाते हैं।

भूषण की भाषा ब्रजभाषा है। उन्होंने अरबी, फारसी के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया है। शब्दों को तुक मिलाने या प्रभाव पैदा करने के लिये तोड़ा-मरोड़ा भी खूब है। अनेक स्थलों पर व्याकरण के नियमों की भी परवाह नहीं की है, फिर भी वीर भावनाओं को व्यक्त करने की उनमें अद्‌भुत क्षमता है। भूषण का काव्य वीर रस का पर्याय बन गया है। भूषण की शैली वीरोचित है। इन्होंने मनहरण ,छप्पय,टोला, उल्लाला, सवैया,गीतिका आदि छन्दों का प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में अवधी ,अपभ्रंश और प्राकृत शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियों और मुहावरों का भी भूषण ने कुशलता से प्रयोग किया है।

भूषण हिन्दी के प्रथम राष्ट्रवादी कवि हैं। उस युग में जब राष्ट्र का वर्तमान स्वरूप नहीं था, तब तत्कालीन समाज के लिये भूषण की रचनाओं का राष्ट्रीय महत्व था। भूषण ने अपनी रचनाओं में अकबर की प्रशंसा की है तथा औरंगजेब की कट्टरतापूर्ण नीति और अत्याचारों की आलोचना की है। भूषण का रीतिकालीन साहित्य में वही स्थान है जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में मैथिलीशरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी और दिनकर का है। भूषण का हिन्दी साहित्य में इसलिए भी महत्व है कि उन्होने रीतिकालीन शृंगारिक साहित्य को धता बताकर खोए हुए राष्ट्र को जागृति का संदेश दिया। अतः भूषण निःसंदेह माँ भारती के भव्य भूषण के सिरमौर हैं।

और उनका संयोजन मूल्य की अभिव्यक्ति की विशेषता है।

'रामधारी सिंह दिनकर' राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कवि हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम पृष्ठों की उजास को अपनी कविता में अपने युग की प्रकाश चेतना का नया वलय प्रदान किया है। यहाँ संकलित कविता में वे देश के गौरवशाली अतीत की तुलना में वर्तमान कालीन परिदृश्य को प्रस्तुत करते हुए निराशा में डूब जाते हैं। देश के गौरवपूर्ण सांस्कृतिक स्थलों और देश के लिए मर मिटने वाले देश-प्रेमियों की उत्सर्ग स्थलियों का स्मरण करते हुए वे वर्तमान में उनकी उपेक्षा के कारण विषादमग्न हो उठते हैं।

विज्ञान के आविष्कार मानवीय हित रक्षा से विमुख होकर जीवन के अभिशाप बन रहे हैं। समाज में व्याप्त शोषण का आगामी सिलसिला मानवता को पद दलित कर रहा है। इस तरह की वैषम्य पूर्ण दुखद स्थितियों को समझकर मानवता के प्रति नयी आस्था को प्रकट करने के लिए कवि, कविता में आह्वान करते हैं। और कहते हैं कि क्रांति धात्रि कविता कलुष से भरे इस युग को तू अपने प्रकाश से नयी ऊर्जा दे, नया विधान दे।

शौर्य वर्णन

इन्द्र जिमि जम्भ पर बाड़व सुअम्भ पर
रावन सदम्भ पर रघकुल राज है।
पौन वारिवाह पर सम्भु रनिनाह पर
ज्यों सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज हैं
दावा द्रुम दंड पर चीता मृगझुण्ड पर,
भूषण वितुण्ड पर जैसे मृगराज हैं।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर
त्यौं मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं॥ 1॥

चकित चकता चौंकि-चौंकि उठै
बार-बार दिल्ली दहसति चितै चाह करसति है।
बिलखि बदन बिलखात बिजैपुर पति
फिरत फिरंगिन की नारी फरकति है॥
थर थर काँपत कुतुबशाह गोलकुण्डा
हहरि हबस-भूप भीर भरकति है।
राजा सिवराज के नगारन की धाक
सुनि कैते बादसाहन की छाती दरकति है॥ 2॥

ऊँचे घोर मन्दिर के अन्दर रहनवारी
ऊँचे घोर मंदिर के अन्दर रहाती हैं।
कन्दमूल भोग करें कन्दमूल भोग करैं
तीन बेर खाती सो तो तीन बेर खाती हैं।
भूषन सिथिल अंग भूखन सिथिल अंग
बिजन डुलाती ते वे बिजन डुलाती हैं।
भूषन भनत सिवराज वीर तेरे त्रास
नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं।। 3॥

भुज भुजगेस की बैसंगिनी भुजंगिनी सी,
खेदि-खेदि खाती दीह दारून दलन के।
बखतर-पाखरन बीच धँसि जाति मीन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के।
रैयाराव चंपति के छत्रसाल महाराज,
भूषन सकै करि बखान को बलन के।
पच्छी परछीने ऐसे परे पर छीने बीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।। 4॥

कवि परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर'

दिनकर हिन्दी साहित्य के ओज और पौरुष के कवि माने जाते हैं। आधुनिक काव्य के ओजस्वी कवि, राष्ट्रकवि के नाम से विख्यात रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितम्बर सन् 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ था। कविता लिखने में दिनकर की रुचि बचपन से ही थी। पं. रामनरेश त्रिपाठी की 'पथिक' और मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' रचनाओं का दिनकर पर काफी प्रभाव पड़ा। बाद में सन् 1921 के आंदोलन का भी प्रभाव पड़ा। 1950 में वे मुजफ्फरपुर कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष बने और 1952 में इन्हें राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया गया। सन् 1931 में इनका बहुचर्चित काव्य 'उर्वशी' प्रकाशित हुआ और इसी रचना पर इन्हें सन् 1972 में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। 24 अप्रैल सन् 1974 ई. को हिन्दी काव्य गगन का यह दिनकर हमेशा के लिये अस्त हो गया। दिनकर जी प्रारंभ से ही लोक के प्रति निष्ठावान, सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सजग और जन साधारण के प्रति समर्पित कवि थे। इनकी कविता पर राष्ट्रीयता की छाप सबसे अधिक हैं।

दिनकर ने काव्य और गद्य दोनों ही क्षेत्रों में सशक्त साहित्य का सृजन किया है। उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं:-

काव्य संग्रह:- 'रेणुका हुंकार' 'रसवन्ती' 'द्वन्द्वगीत' 'धूप-छाँव' 'साम धेनी' 'कुरूक्षेत्र' 'रश्मिरथी' 'उर्वशी' 'परशुराम की प्रतीक्षा' 'बापू' मगध की महिमा आदि।

गद्य:- मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर, संस्कृति के चार अध्याय।

दिनकरजी हिन्दी के क्रान्तिदर्शी कवि

कविता का आह्वान

क्रांतिधात्रि! कविते जाग उठ आडम्बर में आग लगा दे।
पतन पाप पाखण्ड जलें, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।

विद्युत की इस चकाचौंध में देख, दीप की लौ रोती है।
अरी! हृदय को थाम महल के लिए झोपड़ी बलि होती है।

देख कलेजा फाड़ कृषक, दे रहे हृदय शोणित की धारें।
और उठी जातीं उन पर ही वैभव की ऊँची दीवारें।

बन पिशाच के कृषक मेघ में नाच रही पशुता मतवाली।
आगन्तुक पीते जाते हैं, दीनों के शोणित की प्याली।

उठ भूषण की भाव रंगिणी! रूसो के दिल की चिनगारी।
लेनिन के जीवन की ज्वाला जाग जागरी क्रांतिकुमारी।

लाखों क्रोंच कराह रहे हैं जाग आदि कवि की कल्याणी।
फूट-फूट तू कवि कंठों से, बन व्यापक निज युग की वाणी।

बरस ज्योति बन गहन तिमिर में फूट मूक की बनकर भाषा।
चमक अन्ध की प्रखर दृष्टि बन, उमड़ गरीबी की बन आशा।

थे। उनकी कविता हृदय को झकझोर डालती है। वर्तमान भारत की दलित आत्मा उनकी कविता में जाग उठी है। दिनकर की कविताओं में माधुर्य की अपेक्षा ओज अधिक है। इसलिए प्राणों में स्फूर्ति उत्पन्न कर देने की शक्ति उनकी रचनाओं में है। हुंकार, सामधेनी, कुरूक्षेत्र और रश्मिरथी यदि उनकी ओजपूर्ण रचनाएँ है तो रसवन्ती, द्वन्द्वगीत चिन्तन प्रधान रचनाएँ हैं। दिनकर की रचनाओं में देशव्यापी जागरण का उच्च स्वर है। उसमें भारत के विगत स्वर्णयुग की सुनहरी किन्तु ममतामयी करुण स्मृति है और वर्तमान समय में आर्य संस्कृति की पतितावस्था के प्रति असंतोष के कारण वे क्रान्ति चाहते है :-

क्रांति धात्रि कविते जाग उठ, आडम्बर में आग लगा दे।
पतन, पाप, पाखण्ड जले, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।।

दिनकर जी की भाषा शुद्ध खड़ी बोली है। वे अपनी भाषा में अधिकांश तत्सम शब्दों का प्रयोग करते हैं। उनका शब्द चयन अत्यन्त पुष्ट और भावनुकूल होता है। उनकी भाषा उनके विचारों का पूर्ण रूप से अनुगमन करती है। शब्दों के तोड़-मरोड़ और व्याकरण की अशुद्धियों से उनकी भाषा मुक्त है। उनकी छन्द योजना नवीन है। उस पर उनका पूरा अधिकार है। अलंकारों के प्रयोग में स्वाभाविकता है। उनकी समस्त रचनाओं में भाव और भाषा का सामजंस्य बराबर मिलता है।

दिनकर अपने युग के प्रतिनिधि कवि है। उनकी भाषा में ओज, उनके भावों में क्रान्ति की ज्वाला और उनकी शैली में प्रवाह है। दिनकर की कविता में महर्षि दयानन्द की सी निडरता, भगतसिंह सा बलिदान, गांधी की सी निष्ठा एवं कबीर की सी सुधार भावना एवं स्वच्छन्दता विद्यमान है। वे आधुनिक हिन्दी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि है।

गूँज शान्ति की सुखद साँस-सी, कलुष पूर्ण युग. कोलाहल में।
बरस सुधामय कनक वृष्टि बन, ताप तप्त जल के मरुस्थल में।

खींच स्वर्ग संगीत मधुर से जगती को जड़ता से ऊपर।
सुख की स्वर्ण कल्पना सी तू छा जाए कण-कण में भूपर।

क्या होगा अनुधार न वाष्प हो पड़े न विद्युत दीप जलाना।
मैं न अहित मानूँगा चाहे मुझे न नभ के पंथ चलाना।

तमसा के अति भव्य पुलिन पर, चित्रकूट के छाया तरु पर।
कहीं तपोवन के कुंजों में देना पर्ण कुटी का ही घर।

जहाँ तृणों में तू हँसती हो, बहती हो सरि में इठलाकर।
पर्व मनाती हो तरु -तरु पर, तू विहंग स्वर में गा-गाकर।

कन्दमूल, नीवार, भोगकर, सुलग इंगुदी तेल जलाकर।
जन समाज सन्तुष्ट रहे, हिलमिल आपस में प्रेम बढ़ाकर।

धर्म भिन्नता हो न सभी जन,शैल तरी में हिलमिल गावें।
ऊषा के स्वर्णिम प्रकाश में, भावुक भक्ति मुग्ध मन गावें।

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) भूषण ने अपने छन्दों में किन-किन राजाओं की प्रशंसा की है?

(2) शिवाजी के नगाड़ों की आवाज सुनकर राजाओं की क्या दशा होती है?

(3) दिनकर जी ने जनता को जगाने के लिए किसका आह्वान किया है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) कवि कैसे समाज की रचना करना चाहता है?

(2) 'लाखों क्रोंच कराह रहे हैं' से कवि का क्या आशय है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) शिवाजी के भय से मुगल रानियों की दशा का वर्णन भूषण ने किस प्रकार किया है ?

(2) छत्रसाल की बरछी का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(3) कवि ने कविता के क्रांतिकारी रूप का आह्वान क्यों किया है?

(4) निम्नलिखित पद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए-

(क) दावा द्रुम दंड पर..... सेर सिवराज हैं।

(ख) क्रांतिधात्री ! कविते ..... बलि होती है।

(ग) उठ भूषण की भाव ..... निज युग की वाणी।

काव्य सौंदर्य-

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

पौन, सम्भू, कान्ह, मलिच्छ, सिब, सिथिल, आग

पढ़िए और समझिए-

गुरुजी की अपेक्षा थी कि मैं वैज्ञानिक बनूँ, लेकिन परिस्थितियों वश मैं उनकी अपेक्षा को पूरा न कर सका तो गुरुजी ने कहा कि तुमने मेरी उपेक्षा की है। मैंने उससे कहा कि मैं बिना किसी अवलम्ब के विज्ञान के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकता और आप मुझे अविलम्ब विज्ञान के ज्ञाता के रूप में देखना चाहते हैं।

उपर्युक्त अनुच्छेद में रेखांकित शब्दो में उच्चारण की दृष्टि से लगभग समानता (अपेक्षा,उपेक्षा और अवलम्ब, अबिलम्ब) दिखाई देती है लेकिन उनके अर्थ भिन्न-भिन्न हैं। जैसा कि-

अपेक्षा- आवश्यकता, इच्छा

उपेक्षा– तिरस्कार, अवहेलना

अवलम्ब–सहारा

अविलम्ब–शीघ्र, तुरन्त

ध्यान दीजिए-

जिन शब्दों का उच्चारण लगभग समान हो किन्तु अर्थ भिन्न–भिन्न हो, उन्हें समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

2. **निम्नलिखित समोच्चारित भिन्नार्थक शब्दों को इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए। अंश–अंस, वश–वंश, शेर–सेर, ग्रह–गृह, छात्र–क्षात्र, बात–वात।**

3. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए–

अ. क्रान्ति धात्रि! कविते जाग उठ आडम्बर में आग लगा दे।

आ. फूट–फूट तू कवि कंठों से बन व्यापक निज युग की वाणी।

इ. बरस सुधामय कनक दृष्टि बन ताप तप्त जन वक्षस्थल में।

पढ़िए और समझिए-

सौमित्र से घननाद का, रव अल्प भी न सहा गया।

निज शत्रु को देखे बिना, उनसे न तनिक रहा गया।

रघुवीर का आदेश ले, युद्धार्थ वे सजने लगे।

रण–वाद्य निर्घोष करके, धूम से बजने लगे।

यहाँ युद्ध क्षेत्र में मेघनाद की ललकार को लक्ष्मण सहन नहीं कर सके। वे श्रीराम से आदेश पाकर युद्ध के लिए तैयार हो गए और युद्ध की रणभेरी बज गई। उपर्युक्त पंक्तियों में मेघनाद की ललकार से लक्ष्मण के मन में उत्साह–भाव का संचार हो गया अत: यहाँ वीर रस है।

जहाँ किसी दृश्य को देखकर या ललकार सुनकर या साहित्य को पढ़कर मन में उत्साह के भाव का संचार हो, वहाँ वीर रस होता है।

सरस काव्य रचना में मन में तेज उत्पन्न करने वाले वर्णों से समन्वित कथन में ओज गुण होता है। ओज गुण वीर, भयानक और रौद्र रस में रहता है। उपर्युक्त उदाहरण में वीर रस के साथ–साथ ओज गुण भी है।

4. भूषण के संकलित अंश में से वीररस का एक उदाहरण लिखिए।

5. निम्नलिखित पंक्तियों में शब्दगुण लिखिए –

राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि केते बादसाहन की छाती दरकति है।

योग्यता विस्तार

1. भूषण के वीररस से पूर्ण अन्य छंद छाँटकर पढ़िए।
2. दिनकर की ओजगुण युक्त कविताएँ पुस्तकालय से खोजकर संकलित कीजिए।
3. शाला के सांस्कृतिक आयोजनों में अपने साथियों के साथ वीर रस की कविताओं का सस्वर पाठ अभिनय के साथ कीजिए।
4. मध्यप्रदेश के वीर रस के रचनाकारों की एक-एक कविता खोजिए और सुलेख में लिखकर कक्षा में टाँगिए।
5. देश प्रेम पर आधारित लघुनाटिका को स्वयं बनाइए तथा गणतन्त्र दिवस/ स्वतंत्रता दिवस पर उसे प्रस्तुत कीजिए।

शब्दार्थ

शौर्य वर्णन

(1) **जिमि**=जैसे। **जम्भ**=महिषासुर राक्षस का पिता, जिसका वध इन्द्र ने किया था। **बाड़व**=बडवानल, समुद्र में लगी आग। **सुअम्भ**=जल। **सदंभ**-घमंडी। **पौन**=पवन, हवा। **वारिवाह**= बादल। **रतिनाह**=कामदेव। **राम द्विजराज**=परशुराम। **दावा**= दावाग्नि, जंगल की आग। **द्रुमदंड**=पेड़ की शाखाएँ। **बितुंड**= हाथी। **तेज**=प्रकाश। **तम अंश**= अंधकार का भाग। **मलिच्छ** =मुगल शासक।

(2) दहसति= डरती है। **चाह**= खबर। **बिलखात** = दु:खी होता है। **खरकति है**=खटकती है। **नारी**=नाड़ी। **हहरि**=भयभीत होकर। **भरकति**=भड़क जाती है।

(3) **घोर**=भारी भयानक। **मंदर**=महल, पर्वत। **कंदमूल**=मिश्री जैसे तत्व जैसे मिठाई, वनस्पति की जड़। **तीन बेर**= तीन बार, तीन जंगली बेर। **भूषण**=आभूषण। **भूखन**=भूख से । **सिथिल**=सुस्त। **बिजन**=पंखा, निर्जन स्थान। **त्रास**=भय। **नगन**=रत्न, नग्न। **जड़ाती**=जड़ जड़वाती, ठिठुरती।

(4) **भुजगेस**=शेषनाग। **वैसंगिनी**=उम्रभर साथ देने वाली। **खेदि**-खेदि= खदेड़-खदेड़कर। **खाती**=डसती। **दीह**= दीर्घ, **बड़े पाखरन** = लोहे की झूल। **मीन**=मछली। **पारवाह**=प्रवाह। **परछीने**=परकटे। **पर**=शत्रु। **छीने**= निर्बल।

कविता का आह्वान

हृदय शोणित=हृदय का खून, **आगन्तुक**=बाहर से आने वाले, अंग्रेज। **रूसो**=फ्रांस की राज्य क्रांति का जनक। **लेनिन**=सुप्रसिद्ध रूसी क्रांतिकारी **आदिक्रांति**=वाल्मीकी/नभ के । **पंथ चलाना**=वायुयान से यात्रा करना। **तमसा**=एक नदी। **पुलिन**=**किनारे**। **नीवार**=धान

***